भारतीय वांड्मय पर स्वामी विवेकानंद के दर्शन का प्रभाव

करुणा पीटर

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

संसार में प्रत्येक क्षण कोई–न–कोई जन्म लेता ही रहता है पर बहुत कम लोग अपने कदमों के निशान छोड़ जाते हैं। एक व्यक्ति का जगत में मानव रूप में जन्म लेना महत्वपूर्व नहीं होता है। महत्वपूर्ण है कि वह मानव रूप में किस तरह का जीवन व्यतीत करता है। यदि उसके कर्म और विचार लम्बे समय तक समाज का मार्गदर्शन करते हैं, तो वह सदा के लिए अमर हो जाता है। स्वामी विवेकानंद ऐसे ही महान पुरुषों में से एक हैं, जिनके विचार और उच्च आदर्श ने समाज को एक नवीन दिशा प्रदान की।

स्वामी ने भारत के जनसमुदाय की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थिति को नजदीक से देखा और पाया कि सामाजिक कुरीतियां कुछ अंधविश्वासों के कारण उत्पन्न हुए हैं। इसका मूल कारण लोगों के आध्यात्मिक मूल्यों में कमी थी। इसके लिए उन्होंने आध्यात्मिक जागरूकता लाना अनिवार्य समझा।

स्वामी विवेकानंद के जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव प्राचीन भारतीय दर्शन वेदान्त का पड़ा। उन्होंने बताया कि आध्यात्मिकता पर केवल संन्यासियों, संतों या योगियों का ही विशेषाधिकार नहीं है। अपने आप पर विश्वास करके हम भी आत्म–शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति अर्जित कर सकते हैं। स्वामी विवेकानंद के मतानुसार सभी व्यक्ति ब्रहमस्वरूप के कारण एक ही हैं। अतः स्वामी सभी प्राणियों से प्रेम और सभी धर्मो के प्रति आदर का भाव उत्पन्न किये। उन्होंने भूख से मरनेवाले लोगों की रक्षा करना वेदान्त का सार माना।

स्वामी का गुरु के विषय में यह मत था कि सच्चा गुरु वह होता है, जो समय–समय पर आध्यात्मिक शक्ति के भंडार के रूप में अवतीर्ण होता है। जिस प्रकार सूर्य को देखने के लिए दीया नहीं जलाना पड़ता है उसी प्रकार जब सहायता के लिए गुरु का आगमन शिष्य के जीवन में होता है, तो आत्मा अपने–आप उन्हें जान लेती है। सत्य स्वयं ही प्रमाण होता है। स्वामी कहते हैं:–**"गुरु के सम्बन्ध में पहले यह जान लें कि उनका चरित्र कैसा है, और फिर तब देखना होगा कि वे कहते क्या हैं। गुरु को धन, यश के लिए शिक्षा नहीं देनी चाहिए। गुरु का कार्य सारी मानवजाति के प्रति विशुद्ध प्रेम से प्रेरित हो। भगवान प्रेम स्वरूप हैं, और जिन्होंने इस तत्व की उपलब्धि कर ली है, वे ही मनुष्य को शुद्ध होने, ईश्वर को जानने की शिक्षा दे सकते हैं।"1**

स्वामी विवेकानंद देश का भ्रमण कर देश के विकास के मार्ग की बाधा को समझ चुके थे। वे यह समझ चुके थे कि भारतवासियों की अज्ञानता तथा अशिक्षा उनके पतन और अधोगति का कारण है अतः वे देश की उन्नति के लिए युवकों के बढ़ावा देते थे क्योंकि युवा पीढ़ी पूरे जोश तथा नए–नए आधुनिक तकनीकों के साथ काम करता है। उन्हें युवावर्ग पर पूरा भरोसा था। इसी कारण स्वामी ने भारत की युवा शक्ति को, लोहे की मांसपेशियां, फौलाद की नसें और भीमकाय इच्छाशक्ति से देश का विकास करने का आह्वान करते हुए कहा:– **"देश को योद्धाओं की आवश्यकता है: योद्धा बनो! चट्टान की भांति डट जाओ। हिन्दुस्तान को चाहिए कि एक विद्धुतोत्पन्न ज्वाला, जो राष्ट्र की नसों में नवचेतना फूंक दे!"2**

विवेकानन्द के जीवन का एकमात्र लक्ष्य भारत और समस्त विश्व के मानव जाति का उद्धार करना था| स्वामी इसके लिए वेदांत और अध्यात्म का प्रसार करते रहें| स्वामी मानव जीवन को कल्याणकारी बनाने पर जोर डालते थे। व्यक्ति में अच्छे आदर्शों और भाव का समन्वय होना चाहिए। इसके लिए अपने भावों को संचित करना आवश्यकता होता है। उन्हीं के शब्दों में:– **" सावधान, भाव सम्पदा को लौकिक प्रयोजनों या प्रपंचों में बर्बाद मत करना। समझ और विवेक का ज्ञान होना चाहिए। अपने लिए तो पशु–पक्षी भी जी लेते हैं। आप जिए तो ऐसा पथ अपनाए जो विराट मानव समाज के लिए श्रेयस्कर है।"**3

स्वामी का मानना था कि मनुष्य को स्वयं पर विश्वास होना आवश्यक है तभी वह जीवन में लक्ष्य प्राप्त कर महान बन सकता है। लक्ष्य की प्राप्ति में जरुरी नहीं है कि पहली बार में ही सफलता मिल जाए। संभव हो कि हम कई बार असफल हो पर असफलता से कभी घबराना नहीं चाहिए बल्कि उससे सबक लेकर पुनः प्रयत्न करना चाहिए। जीवन पथ पर मंजिल की ओर आगे बढ़ने के क्रम में अनेक मुश्किलें चुनौतियों के रूप में सामने आती हैं। इन चुनौतियों तथा संघर्ष से ही जीवन सार्थक बनता है। स्वामी विवेकानंद अपने जीवन में सतत कर्मशील रहें। स्वामी काम करते समय सदा उत्साह और उमंग से भरे रहते थे। वह कहते थे:–**"स्वार्थपरता को ही दूर करने की कोशिश करो।" वह कहते थे, संघर्ष करो, हारो फिर उठो। फिर संघर्ष करो। मगर हिम्मत मत हारो। यही जीवन का आदर्श है।"** 4

स्वामी विदेश में रहकर भी अपने देश के विषय में ही सोचते रहते थे। भारत भ्रमण कर स्वामी यह जान चुके थे कि भारत की उन्नति के लिए देश में शिक्षा के स्तर को ऊँचा करना आवश्यक है। इसलिए स्वामी महाधर्म सभा में सफलता प्राप्त करने के बाद भारत के उत्थान की योजना तैयार करने लगे। वे अपने भारतीय मित्रों को पत्र लिखकर उन्हें भारत में शिक्षा के विकास और स्वास्थ्य के स्तर में सुधार के अनेक निर्देश देने लगे। इस विकास के लिए वे उनका आत्मबल को बढ़ावा देते हुए लिखते थे: **"स्वयं पर विश्वास रखो!...यदि तुम सचमुच मेरी संतान हो, तो तुम किसी वस्तु से नहीं डरोगे, न किसी बात पर रुकोगे। तुम सिन्हतुल्य होगे। हमें भारत को और पूरे विश्व को जगाना है!"**5

किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जरुरी है कि मनुष्य खुद पर भरोसा रखे। स्वयं पर भरोसा मनुष्य को सबल और दृढ बनता है। खुद पर यकीन कर व्यक्ति पहाड़ को भी हिलाने की क्षमता रखता है। फिर तो जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आत्मविश्वास एक शस्त्र का काम करता है। स्वामी ने आत्मविश्वास की शक्ति को दर्शाते हुए कहा:–**"विश्वास ही भीतर की दैवीशक्ति को जाग्रत कर देता है और तब मनुष्य कुछ भी कर सकता है। मनुष्य असफल तभी होता है जब वह अपनी अनंत शक्ति को अभिव्यक्त करने के लिए ठीक–ठाक प्रयास नहीं करता।... प्रत्येक मनुष्य के भीतर पूरा ब्रह्माण्ड निहित है। एक परमाणु के पीछे सम्पूर्ण ब्रहमांड की शक्ति विद्यमान है। हृदय और मस्तिष्क के बीच द्वंद्व उपस्थित होने पर हृदय का ही अनुसरण करो।"6**

स्वामी विवेकानन्द भारत माँ की गरिमा लौटाने के लिए सनातन धर्म के प्रचार को महत्वपूर्ण माने। वे वेदान्त के महान ज्ञाता थे। उनका मानना था कि जो वेदान्त को जान और समझ जाएगा, उसके मन से सारा भेद खत्म हो जाएगा और वह ईश्वर को पाने में सफल हो जाएगा। वेदान्त पर नवयुवकों को भाषण

देते हुए स्वामी ने कहाः–**"ईश्वर में श्रद्धा के साथ मानव में भी श्रद्धा रखें। स्वामी जी ने उन्हें भी यही कहा कि एक ऐसा मठ बनाएं, जिसमें शिक्षा का विस्तार हो खासकर उन लोगों में जो निर्धन हैं।"7**

स्वामी विवेकानन्द का आलोक सारे विश्व को प्रकाशित किया। उनके सानिध्य में आने के बाद कोई भी अछुता नहीं रह सकता था। उन्होंने देश के युवाओं को देश के विकास कार्य के लिए उपयुक्त माना और युवावर्ग को अपने अभियान में शामिल करने का प्रयास किया। वे अपने देश के युवाओं को देश के विकास के लिए प्रेरित करते थे। उन्होंने देश के युवाओं का कुछ इस तरह आह्वान कियाः–''Standup, Be bold and strong. Take the whole responsibility on your own shoulders, and know that you are the destiny.''8

स्वामी के मार्गदर्शन में उनके शिष्य जन सेवा में लगे हुए थे। कहा जाता है कि एक ही समय में सभी को खुश नहीं किया जा सकता है। अतः कई बार उनके कामों की उपेक्षा की जाती, जिससे शिष्यों का मनोबल टूट जाता था। स्वामी विवेकानंद उन्हें कर्म करने की प्रेरणा देते। स्वामी गीता का उपदेश देकर उनका उत्साहवर्धन करते थेः–**"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। अर्थात् उनके कथनानुसार कर्म करना ही तुम्हारा अधिकार है, उसके फल में नहीं। कमर कसो। प्रभु ने मुझे इसी कार्य के लिए भेजा है।....मित्रो! यह वही महाकष्टों का आगार है, जो जनसेवा के लिए शिक्षालय है, जिसमें सहानुभूति, सहिष्णुता और इन सबसे बढ़कर अदम्य इच्छाशक्ति का विकास होता है, जिसके बल पर व्यक्ति, सारा जगत चूर–चूर हो जाने पर भी, अपने स्थान (सेवा–कर्म) से विचलित नहीं होता।"9** स्वामी के मन में सभी धर्म, जाति के प्रति समानता की भावना थी। वे सभी धर्म का सम्मान करते थे और अपने अध्यात्म, ज्ञान और व्यक्तित्व के विकास के लिए सभी धर्म के धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किये। स्वामी का विचार था कि सभी धर्म की जानकारी हमें उनके मूल तथ्य को समझने और उसे ग्रहण करने में मदद करती है। 27 दिसम्बर को सम्मेलन में स्वामी आत्मिक शक्ति के चरम पर पहुंचकर बोलेः–"A Christian is not to become a Hindu or a Buddhist to become a Christian. But each must assimilate the spirit of others and yet preserve his individuality and grow according to the law of growth.'' 10

श्री रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य स्वामी को एक पवित्र और निश्छल व्यक्ति बना दिया था। गुरु से दीक्षा लेने के बाद स्वामी के मन से अपने मान–सम्मान की भावना खत्म हो गयी थी। स्वामी ने अपने अहम को विगलित कर दिया था। वे सारी मानव जाति के उद्धारक का रूप धारण कर लिए थे। मठ में कुछ निम्न प्रवृति के लोगों के आगमन से गुरुभाई नाखुश थे। तो स्वामी ने समदर्शिता दर्शाते होते हुए उनसे कहाः–**"यदि हम ही लोग पापियों को आश्रय देने में हिचकिचाएंगे, तो वे कहाँ जाएंगे।....उच्छृंखल तथा खराब चरित्र के व्यक्ति का जीवन यदि आप लोग सुधार न सके, तो फिर भगवा वस्त्र धारण कर आचार्यत्व ग्रहण करने का क्या फायदा।"11**

स्वामी मानव के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया करते थे। निरंतर नैतिक मूल्यों के विकास पर बल देते थे और मानवता को सर्वोच्च स्थान पर रखते थे। वे प्रत्येक मानव में ईश्वर का निवास मानते थे। अपनी शिक्षाओं में कहा करते थेः–**"भगवान का आवास निवास मस्जिद, चर्च या गुरूद्वारे नहीं बल्कि उन नर–नारियों के हृदय हैं जिनमें प्रेम, दया और करुणा और लोक कल्याण की तड़प है।"12**

स्वामी विवेकानंद जब शिकागो धर्म सभा में भाग लेने गए तो उन्हें आने चुनौतियों का सामना करना पड़ा। स्वामी के लिए गैरों के बीच जगह बना पाना बड़ा ही कठिन था क्योंकि भारत के विषय में अनेक तरह की भ्रांतियों फैली थी जिसके कारण लोग उन्हें वितृष्ण दृष्टि से देखते थे। भारतीय नारी के विषय में भी निम्न अवधारणा थी जिसे स्वामी ने अद्भुत ढंग से स्पष्ट किया। विश्व धर्म सम्मेलन में श्रीमती पामर सारे राष्ट्र में स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी। 22 सितम्बर को स्वामी ने उनकी उत्सुकता को शांत करते हुए कहाः–**"आधुनिक हिन्दू नारी का आदर्श उसका ब्रह्मचर्य है। नारी केन्द्रीय स्थान में स्थित है जिसकी स्थिरता उसके ब्रह्मचर्य पर निर्भर करती है। हिन्दू नारी अत्यंत आध्यात्मिक होती है....यदि हम उसके इन गुणों की रक्षा कर सकें तथा साथ–ही–साथ उसका बौद्धिक विकास कर सकें तो आनेवाले युग की हिन्दू महिला विश्व की आदर्श नारी होगी।" 13**

विवेकानंद के नेतृत्व में उनके शिष्य और गुरुभाई देश के उत्थान का काम किया करते थे। जब कभी वे लोग अपने लक्ष्य से भटक जाते तो स्वामी उन्हें मार्ग दिखाते थे। ऐसे ही एक बार स्वामी ने अपने गुरु के आदेश को याद करते हुए अपने गुरुभाई शरद से कहाः–**"देश में भूखमरी फैली हुई है, आध्यात्मिकता का क्षय हो चुका है। भारत को पुनः क्रियाशील बनाकर, उसे अपनी ही आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा जगत में सम्मान हासिल कराना होगा।" 14**

स्वामी यह समझते थे कि भारत देश की गरिमा लौटने के लिए भारतवासियों तथा विदेशियों को आध्यात्मिक शिक्षा का मूल्य समझाना होगा। वे अपने अभियान के दौरान किसी भी प्रकार के संस्था के गठन पर ध्यान नहीं देते थे। उन्होंने सहस्त्र–द्वीपोंद्यान में अपने शिष्यों से कहाः– **" मेरा मूलमंत्र है– व्यक्तित्व का विकास। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को योग्य बनाने के सिवाय मेरी और कोई अभिलाषा नहीं है। मेरा ज्ञान अत्यंत सीमित है, और मैं उसका वितरण निःसंकोच करता रहता हूँ।"**15

स्वामी विवेकानंद अपने शिष्यों को हर परिस्थिति में सबल बने रहने के लिए शिक्षित करते थे। किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से नहीं होती है। कई बार तो तपती रेत और आग की दरिया जैसी विकट स्थिति का सामना करना पड़ता है। जो मनुज विषम परिस्थिति में भी धैर्य नहीं खोता है, वही अपने मंजिल तक पहुँच पाता है। स्वामी विवेकानंद ने अपने शिष्यों का मनोबल बढ़ाते हुए कहाः– **''तुम्हें अपने जीवन में उच्चतम आदर्श के साथ उच्चतम व्यावहारिकता का सुंदर सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न करना होगा। इस क्षण तुम्हें गहन ध्यान में और अगले ही क्षण तुम्हें खेतों में जाकर हल चलाने के लिए प्रस्तुत रहना होगा।.....सच्चा मनुष्य वह है जो शक्ति के समान ही शक्तिशाली हो तथापि जिसका हृदय एक नारी के समान कोमल हो।" 16**

स्वामी लोगों को अपने व्याख्यान में ईश्वरीय प्रेम के बारे में बताया करते थे। ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। वह संसार के कण–कण में विराजमान है। ईश्वर अत्यंत प्रेममय है और वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। ईश्वर पर आस्था रखने से हमारी हर मनोकामना पूर्ण होती है। 24 सितम्बर, रविवार के मध्यान्ह सत्र में स्वामी ने प्रवचन में कहाः– **"सारे जगत में ही ईश्वर की पूजा होती है, पर भिन्न–भिन्न तरीके से।...धर्म मानव के स्वभाव में निहित है। ....भगवत प्रेम उसे दान–दया व न्याय की प्रेरणा देता है। सारे मानव ही भगवत से प्रेम करते हैं, क्योंकि भगवान प्रेम ही है।" 17**

स्वामी के मतानुसार वेद अनादि और अनंत है। वेदान्त सिद्धांत एक श्रेष्ठ सिद्धांत है, जो यह बताता है कि प्रत्येक मनुष्य उस परम सत्ता का अंश है। इसी से सम्पूर्ण संसार का सृजन हुआ है। वेद हमें आत्मा की सत्ता का ज्ञान देती है। आत्मा अमर है, शाश्वत है। आत्मा रूप बदलती है। किसी भी प्रकार से आत्मा के अस्तित्व को मिटाया नहीं जा सकता है। हिन्दू वेदांत की व्याख्या करते हुए स्वामी ने बताया किः—**"इस आत्मा को शास्त्र काट नहीं सकते, अग्नि दग्ध नहीं कर सकती, पानी आर्द्र नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती।"..."आत्मा एक ऐसा वृत्त है, जिसकी परिधि कहीं नहीं है, यद्यपि उसका केंद्र शरीर में अवस्थित है, और मृत्यु का अर्थ केवल इतना ही है कि एक शरीर से इस केंद्र का स्थानान्तरण हो जाना।"** 18

प्रकृति में विभिन्नता होने से वह आकर्षक लगती है। एक ही ज्योतिपुंज विभिन्न रंग के कांच के टुकड़ों से होकर गुजरती है और अनेक रंग—रूप ग्रहण करती है। पर स्वभाव से वह एक ही तत्व होता है। इस संदर्भ में स्वामी का मानना था किः— **"हम लोगों को धार्मिक विचारों की अनंत विविधता को स्वीकार करना चाहिए। हर एक को एक ही विचारधारा के अंतर्गत करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए क्योंकि लक्ष्य तो एक जैसा ही है। जिस प्रकार बहुत सी नदियाँ जिनका उद्गम विभिन्न पर्वतों से होता है, टेढ़ी या सीधी बहकर अंत में समुद्र में ही गिरती हैं, उसी प्रकार ये सभी विभिन्न सम्प्रदाय व धर्म, जो विभिन्न दृष्टि—बिन्दुओं से प्रकट होते हैं, सीधे या टेढ़े मार्गों से चलते हुए ही अंततः उसी को प्राप्त होते है।"** 19

शिकागो धर्म सभा में उपस्थित सभी श्रोता स्वामी विवेकानंद की विद्वत्ता से प्रभावित थे। उनके तर्क इतने सशक्त थे कि श्रोता मन्त्र—मुग्ध हो जाते थे। विश्व धर्म सभा में 'मेरे अमेरिकी बहनों एवं भाइयों' के संबोधन से पूरी अमरीकी जनता भाव—विभोर हो गयी थी। विश्व महाधर्म सभा में श्री धर्मपाल ने स्वामी से जब अपने विचार व्यक्त करने का आग्रह किया तो स्वामी दर्शन पर उपदेश देते हुए बोलेः— **"जब तक इस लोक में मृत्यु है, जब तक मानव—हृदय में दुर्बलता है, जब तक मनुष्य के अंतःकरण से दुर्बलताजनित करुण क्रंदन बाहर निकलता है, तब तक इस संसार में ईश्वर में विश्वास भी कायम रहेगा।"20**

स्वामी गरीब, अस्पृश्य लोगों के प्रति सहानुभूति की भावना रखते थे। वे समाज के ऊँच—नीच, छुआछूत, अमीर—गरीब आदि जैसी कुरीतियों का कट्टर विरोध करते थे। स्वामी के मन में गरीबों के लिए असीम प्रेम की भावना थी। वे दरिद्र लोगों की सेवा को नारायण सेवा मानते थे। स्वामी भारतियों को संबोधित करते हुए कहते थेः— **"ऐ भारत! मत भूलना कि तुम्हारा समाज उस विराट् महामाया की छाया मात्र है, तुम मत भूलना कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारा रक्त और तुम्हारे भाई हैं।"21**

स्वामी विवेकानंद भारत के गरीब और दबे हुए लोगों के दुःख को देखकर द्रवित हो जाते थे। स्वामी उनके आत्मबल को बढ़ाकर उनकी सहायता करना चाहते थे। स्वामी ने देश के दीन—हीन, उत्पीड़ितों के उद्धार के लिए भारतियों में साहस और आत्मविश्वास का संचार करने के लिए अद्वैत वेदान्त की बात करते हुए कहा है किः—**"श्रद्धा! श्रद्धा! अपने आप पर श्रद्धा!... यदि पुराणों में वर्णित तैंतीस करोड़ देवताओं के ऊपर, और विदेशियों ने बीच—बीच में जिन देवताओं को तुम्हारे बीच घुसा दिया है उनपर भी, यदि तुम्हारी श्रद्धा हो, और अपने आप पर श्रद्धा न हो, तो तुम कदापि मोक्ष के अधिकारी नहीं हो सकते।"** 22

विवेकानंद अपना सारा जीवन भारत के उद्धार के लिए समर्पित कर दिए थे। उनके सम्बन्ध में खास बात यह थी कि यदि कोई स्वामी का अपमान कर देता तो वे उस अपमान को सहजता से सह लेते थे। पर जब कोई भारत माता का अपमान करने का प्रयास करता तो यह उनके लिए असह्य हो जाता था। स्वामी विवेकानंद के लिए देश के गौरव से बढकर कुछ नहीं था। 19 नवम्बर, 1885 को स्वामी ने एक संगोष्ठी में भारत का गुणगान करते हुए कहाः— **"जो अनंत है, असीम है, वही अभूत है, शाश्वत है। उसे छोड़कर संसार की सभी वस्तुएं नाशवान हैं, ...इस बात को भली—भांति समझ लेने के कारण भारत के लोग सांसारिक सुखोपभोग को विष की भांति त्याज्य समझकर उसे छोड़ देते हैं तथा परमानंद की खोज में दौड़ते हैं।.. केवल भारत ही ऐसा देश है, जिसके मानव हृदय ने इन उदात्त भावनाओं से उन्मत्त होकर पशु, पक्षी आदि सभी में परमब्रह्म का दर्शन कर उसे गले लगाया है।"23**

स्वामी विवेकानंद के समय में भी 'दि इंडियन मिरर', 'अमृतबाजार पत्रिका' और 'दि बंगाली' आदि समाचार पत्र स्वामी के समर्थन में उनके विचार और कथन को छापा करते थे और आज भी उनके विचार छापे जाते हैं ताकि पाठक उसे पढ़कर स्वामी के जीवन लक्ष्य के बारे में जान सके और उनके जीवन दे प्रेरणा ले सके। ये पत्र साहित्य के धरोहर के रूप में संजोये गये हैं। इन पत्रों में स्वामी के व्यक्तित्व के बहुदर्शी रूप देखता है जिससे समय—समय पर समाज उससे लाभान्वित होता रहता है। स्वामी कबीर, मीरा, सुर के पद गया करते थे। वे स्वयं भी कविता लिखा करते थे। स्वामी विवेकानंद 1895 के बसन्त काल में न्यूयार्क में 'मेरा खेल समाप्त हुआ' नामक कविता लिखे, जिसका कुछ अंश उद्धृत हैः—

"समय की लहरों के साथ,

निरंतर उठते और गिरते

मैं चला जा रहा हूँ जिंदगी के ज्वार—भाटे के साथ—साथ

ये क्षणिक दृश्य एक पर एक आते—जाते हैं।...." 24

स्वामी विवेकानंद के शिष्य उनके व्याख्यान तथा विचारों की पांडुलिपि तैयार कर उसे एक पुस्तक का रूप दिए ताकि भावी पीढ़ी भी स्वामी के विचार को समझ और जान सके। स्वामी विवेकानंद की अनेकों काव्य रचना, उनके शिष्यों तथा मित्रों के पत्र, 'विवेक श्रृंखला' नाम से श्रृंखलाबद्ध पुस्तक तथा वेदांत की कर्मयोग, राजयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग नामक पुस्तक भारतीय साहित्य के लिए वरदान के सदृश हैं क्योंकि इनके माध्यम से समाज प्रेरणा ग्रहण करता है। आधुनिक पीढ़ी अपनी भारतीय सभ्यता— संस्कृति के विषय में जानकारी हासिल करती है। और भारत के सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहती है। स्वामी के शिष्यों में कृपानंद के प्रयास से स्वामी के व्याख्यान को लिपिबद्ध किया जा सका ताकि भविष्य में इससे लाभ प्राप्त किया जा सके। कृपानंद यह मानते हैं किः—**"वस्तुतः वे भाषण, जो मानव जाति की धरोहर थे, प्रायः लुप्त हो चुके थे।...किन्तु अब कृपानंद वह नहीं होने देंगे। उन्होंने आशुलिपि सीख भी ली थी और उसका इतना अभ्यास भी कर लिया था कि वे स्वामी के भाषण को लिपिबद्ध कर उन्हें, उनकी पूर्णता में, आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित छोड़ जाएँ।..."** 25

भारतीय साहित्य में विवेकानंद को एक महान दार्शनिक, मनीषी और देशभक्त के रूप में जाना जाता है। इन्होंने अपना सारा जीवन मानव कल्याण एवं भारत के उद्धार में लगा दिया। स्वामी ने पाश्चात्य जगत में हिन्दू धर्म को लोकप्रिय बनाया। स्वामी का लक्ष्य समाज सेवा, मानव की सेवा, जनशिक्षा, धार्मिक पुनरूत्थान और शिक्षा के द्वारा जागरूकता लाना आदि था। विवेकानंद का वेदांत दर्शन एक अनमोल धरोहर है। इसके जरिये उन्होंने लोगों की सोच में परिवर्तन लाया। इतने वर्षों बाद भी विवेकानंद अपने विचारों के द्वारा भारत में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने विचारों के जरिये समाज के सोये जनमानस को जगाने का काम किया। आज जरूरत है कि हम उनके द्वारा दिये गए दर्शन को आत्मसात करें। अपने जीवन में कर्म को प्रधानता दें, तभी हमारा समाज व राष्ट्र आगे बढ़ पाएगा। स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व से विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर इतने प्रभावित थे कि उन्होंने कहा था –यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो आप विवेकानंद का जीवन दर्शन पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पाएंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।

संदर्भ सूची

1 दैनिक भास्कर, पटना, शुक्रवार, 15 जुलाई, 2016, पृष्ठ सं.- 15

2 विकिपीडिया

3 युगपुरुष विवेकानंद एक जीवनी, शोभा माथुर बिजेन्द्र, साक्षी प्रकाशन-दिल्ली, प्रथम प्रकाशन: 2016ए पृष्ठ सं.-350 4 वही, पृष्ठ सं.-356

5 विवेकानंद एक जीवनी, स्वामी निखिलानंद, अनुवादक: स्वामी विदेहात्मानंद, प्रकाशक: अद्वैत आश्रम, पृष्ठ सं.-188.189

6 वही, पृष्ठ सं.-309

7 वही, पृष्ठ सं.-382

8 विश्व-वंद्ध विवेकानंद, त्रिलोकी नाथ सिन्हा, सत्साहित्य प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ सं.-34

9 वही, पृष्ठ सं.-66

10 योद्धा संन्यासी विवेकानंद, वसंत पोतदार,प्रकाशक:प्रभात पेपरबैक्स,प्रभात प्रकाशन, संस्करण-2015ए पृष्ठ सं.-111

11 वही, पृष्ठ सं.-162

12 वही, पृष्ठ सं.-394

13 विश्व धर्म-सम्मलेन 1893, लक्ष्मीनारायण झुंझुनवाला, प्रभात प्रकाशन: नई दिल्ली, संस्करण: 2014ए पृष्ठ सं.-91

14 विवेकानंद एक जीवनी, स्वामी निखिलानंद, अनुवादक: स्वामी विदेहात्मानंद, प्रकाशक: अद्वैत आश्रम, पृष्ठ सं.- 87

15 वही, पृष्ठ सं.- 180

16 वही ,पृष्ठ सं.-309

17 विश्व धर्म-सम्मलेन 1893, लक्ष्मीनारायण झुंझुनवाला, प्रभात प्रकाशन: नई दिल्ली, संस्करण: 2014ए पृष्ठ सं.-142

18 वही, पृष्ठ सं.-106

19 विश्व-वंद्ध विवेकानंद, त्रिलोकी नाथ सिन्हा, सत्साहित्य प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ सं.-71.72

20 विश्व धर्म-सम्मलेन 1893, लक्ष्मीनारायण झुंझुनवाला, प्रभात प्रकाशन: नई दिल्ली, संस्करण: 2014ए पृष्ठ सं.-161

21 विश्व-वंद्ध विवेकानंद, त्रिलोकी नाथ सिन्हा, सत्साहित्य प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ सं.-70

22 विवेकानंद एक जीवनी, स्वामी निखिलानंद, अनुवादक: स्वामी विदेहात्मानंद, प्रकाशक: अद्वैत आश्रम, पृष्ठ सं.-249

23 विश्व-वंद्ध विवेकानंद, त्रिलोकी नाथ सिन्हा, सत्साहित्य प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ सं.-115

24 स्वामी विवेकानंद एक जीवनी, आशा प्रसाद, प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स(प्रा.) लिमिटेड, संस्करण-2016,पृष्ठ सं.-166

25 तोड़ो कारा तोड़ो ;प्रसार), नरेंद्र कोहली, प्रकाशक:- किताबघर प्रकाशन, पृष्ठ सं.-161